सभी स्नेहीजनों को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

RNI-MPBIL/2011/39805 DAVP/134083/25

निष्पक्ष और निर्भीक साप्ताहिक

जगत प्रवाह

वर्ष : 16 अंक : 15 प्रति सोमवार, 18 अगस्त 2025 मूल्य : दो रुपये पृष्ठ : 8

कटनी विधायक संजय पाठक द्वारा जिले में फैलाया गुंडाराज मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के लिए बना चुनौती

कवर स्टोरी

-विजया पाठक

एडिटर

मध्यप्रदेश की राजनीति इन दिनों एक बड़े विवाद की चपेट में है। कटनी जिले से विधायक और पूर्व मंत्री संजय पाठक पर गंभीर आरोप लगे हैं कि उन्होंने न केवल इलाके में गुंडाराज फैला रखा है, बल्कि खनिज विभाग की नाक में भी दम कर दिया है। आरोप इतना गंभीर है कि खनिज विभाग के अधिकारी 445 करोड़ रुपये की वसूली करने जाने से तकरीबन घबरा रहे हैं। सूत्रों का दावा है कि पाठक ने अपनी सियासी और आर्थिक ताकत के दम पर हर तरह का एड़ी-चोटी का जुगाड़ कर लिया है। लेकिन मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव अब भी कार्यवाही के अपने फैसले पर अडिग नजर आ रहे हैं। सवाल यह है कि आखिर मुख्यमंत्री के सामने पाठक का यह मनी मायाजाल कितना टिकेगा और क्यों भाजपा व संगठन अब तक इस मामले पर चुप्पी साधे हुए हैं?

कटनी में 'गुंडाराज' का आरोप

कटनी जिले की राजनीतिक पहचान पिछले दो दशकों में काफी बदल चुकी है। कभी शांत और सामान्य माने जाने वाले इस इलाके में आज आम जनता खुलेआम कहने लगी है कि यहाँ "सत्ता से जुड़कर जो चाहे कर सकता है।" संजय पाठक पर आरोप है कि उन्होंने अपने प्रभाव के जरिए पूरे क्षेत्र में खनन से लेकर ठेकों तक की राजनीति पर कब्जा जमा लिया है। स्थानीय लोगों के अनुसार, प्रशासनिक मशीनरी तक उनके इशारे पर काम करती है। खनिज परिवहन, ठेकेदारी, लाइसेंस और अवैध वसूली– हर जगह उनके नेटवर्क की पकड़ बताई जाती है। यही वजह है कि लोग इसे सीधे तौर पर गुंडाराज कहने से नहीं हिचकिचाते। (शेष पेज 2 पर)

स्वतंत्रता दिवस पर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने दी राज्य को विकास और खुशहाली की सौगात

-विजया पाठक

स्वतंत्रता दिवस का पावन अवसर हर राज्य के लिए केवल औपचारिक आयोजन नहीं, बल्कि जनता के सामने सरकार की नीतियों, उपलब्धियों और संकल्पों को प्रस्तुत करने का मंच होता है। 15 अगस्त 2025 को छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में आयोजित मुख्य समारोह में मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने प्रदेश की जनता के सामने तिरंगा फहराया। जैसे ही लहराता हुआ तिरंगा आसमान को छूता गया, वैसे ही वहाँ उपस्थित हजारों नागरिकों के चेहरे पर गर्व और उल्लास झलक उठा। मुख्यमंत्री ने अपने संबोधन में प्रदेशवासियों को कई नई सौगातें दीं और साथ ही यह वादा भी किया कि आने वाले वर्षों में छत्तीसगढ़ को विकास और खुशहाली की नई राह पर आगे ले जाएंगे। समारोह का मुख्य आकर्षण रहा जब मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने सुबह ठीक 9 बजे परेड ग्राउंड में राष्ट्रीय ध्वज फहराया। पुलिस और सुरक्षा बलों ने सलामी दी।

मुख्यमंत्री की सौगातें

मुख्यमंत्री ने अपने संबोधन की शुरुआत स्वतंत्रता सेनानियों को नमन करते हुए की। उन्होंने कहा कि आजादी हमें बलिदानों के बल पर मिली है और इसे सुरक्षित रखना हम सबकी जिम्मेदारी है।

इसके बाद उन्होंने जनता के लिए कई सौगातों की घोषणा की– कृषि क्षेत्र के लिए विशेष पैकेज, जिससे किसानों को आधुनिक तकनीक, सिंचाई सुविधा और न्यूनतम समर्थन मूल्य का बेहतर लाभ मिल सके। शिक्षा और स्वास्थ्य के लिए नए संस्थान और योजनाएँ। ग्रामीण अंचलों में 200 नए स्कूल भवन और 50 प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र स्थापित करने की घोषणा। महिला सशक्तिकरण पर बल देते हुए उन्होंने कहा कि आने वाले दो वर्षों में 5 लाख से अधिक महिलाओं को स्वरोजगार योजनाओं से जोड़ा जाएगा। युवा वर्ग के लिए कौशल विकास केंद्रों और आईटी हब की स्थापना, जिससे रोजगार के अवसर बढ़ें। इन घोषणाओं के साथ मुख्यमंत्री ने साफ संदेश दिया कि सरकार केवल वादों तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि धरातल पर योजनाओं का क्रियान्वयन सुनिश्चित करेगी। (शेष पेज 3 पर)

मध्यप्रदेश कांग्रेस को कमलनाथ की जरूरत

कमलनाथ मॉडल पर बीजेपी लगा रही मुहर

-विजया पाठक

मध्यप्रदेश में कमलनाथ को राजनीति का चाणक्य भी कहा जाता है। जिसके एक नहीं बल्कि कई कारण हैं। सबसे प्रमुख कारण तो यह है कि वह प्रदेश कांग्रेस में सबसे ज्यादा अनुभवी और प्रभावशाली राजनेता हैं। दूसरा कारण यह है कि उनमें प्रशासनिक स्तर पर सत्ता का संचालन करने की अदभुत क्षमता है। कैसे जनता के हितों में चलाई जाने वाली योजनाओं को लाभ मिले उसका कैसे क्रियान्वयन किया जाये, इसकी कमलनाथ में काफी समझ है। तीसरा सबसे प्रमुख कारण यह है कि वे ऐसे नेता हैं जिन्होंने अपने राजनीतिक जीवन में सत्ता और शासन के लिए अपने उसूलों से समझौता नहीं किया है। संपूर्ण जीवन में निडरता तथा साहस का परिचय दिया। पार्टी और जनता के हितों के लिए बलिदान तक दिया है। जिसको हम सबने 2020 में देख लिया है। यही वह समय था जहां वह चाहते तो एक समझौता करके मुख्यमंत्री के पद पर बने रह सकते थे। लेकिन उन्होंने झुकने के बजाय पद छोड़ना बेहतर समझा। ऐसे तमाम किस्से हैं जो कमलनाथ को आज की स्वार्थी राजनीति में कमलनाथ को एक महान राजनेता की श्रेणी में रखते हैं। (शेष पेज 3 पर)

एक चेहरा जो जिता सकता है मध्यप्रदेश

3 साय ने दी विकास और खुशहाली की सौगात

5 स्वतंत्रता दिवस हर्षोल्लास से मनाया

7 भगवान कृष्णः कर्मयोग के शाश्वत मार्गदर्शक

पार्टी से लेकर संगठन तक, सभी ने संजय पाठक के मायाजाल के आगे झुकाया सिर

क्या मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव पर भी चलेगा पाठक का मनी मायाजाल का काला जादू?

(पेज 1 का शेष)

खनिज विभाग और 445 करोड़ का मामला

सबसे बड़ा विवाद उस समय गहराया जब खनिज विभाग ने 445 करोड़ रुपये की वसूली की तैयारी शुरू की। यह रकम कथित तौर पर अवैध खनन, रॉयल्टी की गड़बड़ी और अवैध ठेकों से जुड़ी बताई जाती है। लेकिन अधिकारी इस वसूली की कार्रवाई को लेकर डर और दबाव में दिखाई दिए। कई अफसरों ने भीतर ही भीतर यह स्वीकार किया कि "कटनी में बिना राजनीतिक छत्रछाया के इतनी बड़ी राशि की वसूली संभव नहीं।" यही भय दिखाता है कि किस तरह एक विधायक का दबदबा सरकारी अमले पर भारी पड़ रहा है।

संजय पाठक का 'जुगाड़ तंत्र'

सूत्रों के अनुसार, संजय पाठक ने इस संकट से बचने के लिए एड़ी-चोटी का जोड़ लगा लिया है। इसमें राजनीतिक लॉबिंग से लेकर मीडिया मैनेजमेंट और अफसरशाही पर दबाव तक हर तरह की चालें शामिल हैं। उनका अब तक का राजनीतिक सफर भी इसी "ताक़तवर नेटवर्क" की पहचान रहा है। कभी कांग्रेस से शुरुआत कर भाजपा तक पहुँचना और हर दल में मंत्रीपद व रसूख बनाए रखना– यह सब दिखाता है कि पाठक सियासत में जुगाड़ और शक्ति संतुलन के उस्ताद हैं।

मुख्यमंत्री मोहन यादव की 'कठोर छवि'

इस पूरे घटनाक्रम में सबसे अहम भूमिका मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की है। सत्ता संभालते ही उन्होंने संकेत दिए थे कि वे खनन माफिया और भ्रष्टाचार पर नकेल कसेंगे। संजय पाठक का मामला इसी एजेंडे का हिस्सा माना जा रहा है। सूत्रों के मुताबिक, मुख्यमंत्री इस पर समझौते के मूड में नहीं हैं। उन्होंने साफ संदेश दिया है कि "भाजपा अब अपने ही नेताओं के दबाव में नहीं झुकेगी।" यही कारण है कि पाठक चाहे जितने जुगाड़ कर लें, कार्यवाही की तलवार अब भी उनके सिर पर लटक रही है।

क्या टिकेगा पाठक का मनी मायाजाल?

यह सवाल सबसे महत्वपूर्ण है। क्या पाठक अपनी आर्थिक ताक़त और राजनीतिक नेटवर्क के दम पर इस कार्रवाई से बच जाएंगे?

आर्थिक शक्तिः कटनी में खनिज कारोबार से उनके पास अपार धन है। यह पैसा राजनीतिक दबाव बनाने और 'मैनेजमेंट' करने की क्षमता देता है।

राजनीतिक रिश्तेः कांग्रेस और भाजपा दोनों में ही उनके पुराने रिश्ते रहे हैं। कई नेता खुले तौर पर उनका समर्थन नहीं भी करें, तो भी पर्दे के पीछे मददगार बन सकते हैं।

स्थानीय दबदबाः कटनी और आसपास में पाठक का ज़मीनी नेटवर्क मज़बूत है। यह उन्हें एक स्थानीय शक्ति केन्द्र बनाता है। लेकिन दूसरी ओर मुख्यमंत्री का स्पष्ट रवैया और भाजपा की बदलती रणनीति उनके लिए सबसे बड़ी चुनौती है।

भाजपा और संगठन की चुप्पी

इस पूरे प्रकरण में भाजपा और उसके संगठन की चुप्पी सबसे बड़ा सवाल है। क्यों पार्टी अब तक खुलकर कोई बयान नहीं दे रही?

1.आंतरिक असमंजसः भाजपा नहीं चाहती कि कार्रवाई से संगठन में असंतोष फैले।

2.जनता की धारणाः पार्टी इस मामले को लेकर जनता में "कड़े कदम उठाने वाली सरकार" की छवि बनाना चाहती है।

3.राजनीतिक गणितः संजय पाठक जैसे नेताओं का स्थानीय स्तर पर असर है। पार्टी चाहती है कि यदि कार्रवाई हो भी, तो चुनावी नुकसान कम से कम हो।

कार्रवाई से मिलेगा दूसरे राजनेताओं को सबक

यदि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव संजय पाठक पर सख्त कार्रवाई कर पाते हैं, तो यह निश्चित ही भाजपा के अन्य नेताओं के लिए एक बड़ा सबक होगा। इससे संदेश जाएगा कि अब सत्ता के संरक्षण में अवैध कारोबार और गुंडाराज नहीं चल सकेगा। दूसरी ओर यदि कार्रवाई टल गई या सिर्फ दिखावटी रही, तो यह प्रदेश की राजनीति में नकारात्मक संकेत देगा। जनता मानेगी कि भाजपा भी कांग्रेस की तरह अपने प्रभावशाली नेताओं पर हाथ डालने से डरती है। कटनी के विधायक और पूर्व मंत्री संजय पाठक का मामला केवल एक व्यक्ति की राजनीति का किस्सा नहीं है, बल्कि यह पूरे प्रदेश की राजनीतिक संस्कृति और शासन की साख का प्रश्न है। यदि मुख्यमंत्री मोहन यादव इस मामले में दृढ़ रहते हैं और संजय पाठक के मनी मायाजाल को तोड़ते हैं, तो यह प्रदेश की राजनीति में एक टर्निंग प्वाइंट होगा। लेकिन यदि भाजपा और संगठन चुप्पी साधे रहते हैं और कार्यवाही अधूरी रह जाती है, तो यह न केवल सरकार की साख पर सवाल होगा, बल्कि जनता का भरोसा भी डगमगा सकता है। इसलिए आने वाले दिनों में यह देखना बेहद रोचक होगा कि क्या कटनी के गुंडाराज पर सरकार की नकेल कस पाएगी, या फिर यह भी राजनीति के उन्हीं किस्सों में जुड़ जाएगा जहाँ सत्ता के सामने संगठन और नैतिकता बौनी साबित होती है।

पत्रिकारिता के अद्वितीय मिसाल थे श्री यशवन्त अरगरे

कलम के सिपाही

-चन्द्रहास शुक्ल

पत्रकारिता और केवल पत्रकारिता की दम पर कोई व्यक्ति 60 वर्ष तक इस जगत में शान से और निष्कलंक होकर रह सकता है, इसकी अद्वितीय मिसाल थे श्री यशवन्त अरगरे। उनकी पारस जैसी कलम ने जिस अखबार का स्पर्श किया वह सोना बनकर दमक उठा। 6 नवम्बर 1928 को जबलपुर में जन्मे श्री यशवन्त अरगरे ने पत्रकारिता में पहला कदम 1949 में रखा। तब वे जबलपुर के सिटी कॉलेज में एम.ए. (अर्थशास्त्र) के छात्र थे। वे जबलपुर से प्रकाशित 'दैनिक जय हिन्द' में सह सम्पादक के पद पर नियुक्त हुए। उस समय 'दैनिक जय हिन्द' पूरे मध्य भारत क्षेत्र (सेन्ट्रल इण्डिया) का एक मात्र हिन्दी दैनिक था। सुविख्यात साहित्यकार सांसद और कांग्रेस के प्रदेशाध्यक्ष सेठ गोविन्ददास 'जय हिन्द' के संचालक निर्देशक थे। श्री अरगरे ने 'जय हिन्द' के सह सम्पादक एवं सहायक सम्पादक के रूप में समाचार संकलन व लेखन, प्रमुख घटनाओं की स्पॉट-रिपोर्टिंग, स्तम्भ-लेखन, सम्पादकीय (अग्रलेख) लेखन मैग्जीन व विशेषांक सम्पादन आदि सम्पादकीय विभाग के प्रायः सभी कार्य, प्रधान सम्पादक श्री कालिका प्रसाद दीक्षित 'कुसुमाकर' एवं उनके बाद श्री श्याम सुन्दर शर्मा के निर्देशन में निष्पादित किये। उनके दीर्घ पत्रकारीय जीवन व कर्म की नींव जय हिन्द में ही रखी गई। 1953 में स्वतंत्रता संग्राम सेनानी व जुझारू पत्रकार श्री नर्मदा प्रसाद सराफ द्वारा संयोजित व सम्पादित सान्ध्य दैनिक 'समाज' से भी श्री अरगरे सम्बद्ध रहे। सहकारिता के सिद्धान्त पर संचालित मध्यप्रदेश का यह पहला अखबार था। 1954 में जय हिन्द के बाद कुछ समय तक नवभारत जबलपुर में सहायक सम्पादक पद पर रहे। प्रसिद्ध पत्रकार श्री मायाराम सुरजन तब नवभारत जबलपुर के सम्पादक थे। तदुपरान्त श्री अरगरे अंग्रेजी भाषा की पत्रकारिता के यशवंत अरगरे क्षेत्र में आ गये। पुराने मध्यप्रदेश की राजधानी नागपुर से प्रकाशित, महात्मा गाँधी के राजनीतिक गुरू श्री गोपाल कृष्ण गोखले द्वारा स्थापित सर्वेन्ट्स ऑफ इण्डिया सोसायटी के दैनिक द हितवाद में वे सह-सम्पादक नियुक्त हुए। अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के पत्रकार, राष्ट्रसंघ में भारत के प्रतिनिधि मण्डल के सदस्य रहे तथा बाद में सांसद निर्वाचित श्री ए.डी. मणि सेन्ट्रल इण्डिया के सर्वाधिक प्रसार व प्रतिष्ठा वाले दैनिक द हितवाद के प्रधान सम्पादक थे। द हितवाद में श्री यशवन्त अरगरे चार दशक की लम्बी अवधि तक सेवारत रहे तथा सह सम्पादक, सहायक सम्पादक तथा भोपाल संस्करण के सम्पादक पद पर कार्य किया। श्री अरगरे दिल्ली से प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक द मदरलैंड के मध्यप्रदेश के विशेष संवाददाता भी रहे। द मदरलैंड के प्रधान सम्पादक थे श्री डी.आर. मनकेकर जो विख्यात पत्रकार थे तथा इण्डियन एक्सप्रेस के प्रधान सम्पादक रह चुके थे। श्री यशवन्त अरगरे ने निबाहीं उनमें, दैनिक जागरण संयुक्त सम्पादक, दैनिक स्वदेश सलाहकार सम्पादक, द मूव ऑन इंग्लिश वीकली प्रधान सम्पादक, पंचायत खबर ग्राम्य जीवन साप्ताहिक के प्रधान सम्पादक, यात्रिक न्यूज एण्ड फीचर्स सर्विस प्रधान सम्पादक उल्लेखनीय हैं। श्री अरगरे श्रमजीवी पत्रकार आन्दोलन से शुरू से ही जुड़े रहे तथा मध्यप्रदेश श्रमजीवी पत्रकार संघ में भी पदाधिकारी रहे। वे पब्लिक रिलेशन्स सोसायटी ऑफ इंडिया की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य, साथ ही वे इस संस्था के मध्यप्रदेश चेप्टर के कोषाध्यक्ष भी रहे। नागपुर व भोपाल में विधानसभा कार्यवाही, विश्लेषण और लॉबी की राजनैतिक गतिविधियों की रिपोर्टिंग उन्होंने चार दशक से अधिक अवधि तक की। वे आकाशवाणी पर 1956 से व बाद में दूरदर्शन के विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेते रहे। जबलपुर, नागपुर व भोपाल की अनेक सांस्कृतिक बौद्धिक सामाजिक संस्थाओं से भी श्री यशवन्त अरगरे का जुड़ाव रहा। वे जबलपुर की प्रसिद्ध सांस्कृतिक संस्था 'मिलन' के प्रदेश उपाध्यक्ष, भोपाल के कास्मॉपॉलिटन इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक अफेयर्स के उपाध्यक्ष व 'जीवन कला संगम' के उपाध्यक्ष रहे। 1976-78 में श्री यशवन्त अरगरे ने केन्द्र सरकार के फिल्मस् डिवीजन द्वारा निर्मित व श्री प्रताप शर्मा द्वारों निर्देशित चलचित्र 'कमली' तथा प्रसिद्ध निर्देशक श्री लोक सेन द्वारा निर्मित चलचित्र 'आखिर' में भी चरित्र भूमिकाएँ अभिनीत कीं। उन्होंने आकाशवाणी के समाचार प्रभाग के अतिरिक्त बहुधा महिला, बाल, शिक्षा शालेय, श्रमिक, नाटक, फीचर, रूपक प्रभागों के लिये भी लेखन किया। श्री अरगरे माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय की स्थापना से जुड़े रहे तथा मध्यप्रदेश व राजस्थान के अनेक नगरों में पत्रकारों को प्रशिक्षण दिया। ग्रामीण पत्रकारों की कई प्रशिक्षण कार्यशालाओं को भी संचालित किया। वे इस विश्वविद्यालय से सम्बद्ध जगत पाठक पत्रकारिता महाविद्यालय भोपाल के प्राचार्य भी थे। जीवन के आखिरी क्षण तक पत्रकारिता में सक्रिय रहते हुए पाक्षिक नवलोक भारत, मासिक अविराम पथिक एवं दृष्टिकोण फीचर्स के वे प्रधान सम्पादक थे। पत्रकारिता के लिये श्री यशवन्त अरगरे को 30 से अधिक पुरस्कार एवं सम्मान मध्यप्रदेश और राजस्थान की संस्थाओं द्वारा मिले। इनमें पं. माधवराव सप्रे संग्रहालय द्वारा प्रदत्त मध्यप्रदेश का सर्वाधिक प्रतिष्ठित लाल बल्देव सिंह सम्मान भी सम्मिलित है। श्री अरगरे ने यूनेस्को, अमेरिकन सेन्टर इण्टरनेशनल कम्युनिकेशन्स एजेंसी व एशियन मॉस कम्युनिकेशन सेन्टर (सिंगापुर) के पत्रकारिता व जनसंचार सम्बन्धित सेमिनारों में भाग लिया। उन्होंने दक्षिण पूर्व एशियाई देशों की भी यात्रा की।

मध्यप्रदेश कांग्रेस को कमलनाथ की जरूरत

(पेज 1 का शेष)

प्रदेश में कमलनाथ की स्वीकार्यता को 2018 में देख चुके हैं। उनके चेहरे पर लड़ा गया वह चुनाव पिछले 15 साल से शासन कर रही बीजेपी को उखाड़ फेंकने में कामयाब रही। अपने 18 माह के शासनकाल में ही कमलनाथ ने प्रदेश की दशा और दिशा बदल दी। प्रशासनिक कसावट से लेकर शासकीय योजनाओं की पारदर्शिता पर बेहतर काम किया। कमलनाथ के विकास मॉडल को आज भाजपा अपना रही है। अपने शासन में बनाई गई कई योजनाओं को बीजेपी शासन में बरकरार रखा है और उनकी सराहना की जा रही है। यह कांग्रेस के लिए गौरव की बात है कि बीजेपी कमलनाथ के कार्यों को सराह रही है।

हाईटेक गौशाला निर्माण, मेट्रो की कल्पना, कन्यादान योजना, किसान ऋण माफी, ओबीसी वर्ग के लिए 27 फीसदी आरक्षण, सामाजिक सुरक्षा पेंशन में बढ़ौत्री कमलनाथ सरकार की देन

कमलनाथ सरकार में प्रदेश में हाईटेक गौशालाओं का निर्माण हुआ, कन्यादान योजना और सामाजिक सुरक्षा पेंशन में बढ़ौत्री की गई। वहीं ओबीसी वर्ग के लिए 27 फ़ीसदी आरक्षण का खाका कमलनाथ सरकार ने ही तैयार किया। ऐसे तमाम मुद्दे हैं जिन पर आज मोहन सरकार अपनी मुहर लगा रही है और इनको आगे बढ़ा रही है। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि कमलनाथ शासन में समाज के कल्याण के लिए जो कदम उठाये गये थे वह सटीक और लाभदायक थे। इसके अलावा किसान ऋण माफी, किसानों की आय बढ़ाने के मामलों पर कमलनाथ सरकार ने काम किया। युवाओं को रोजगार देने तथा नई शिक्षा नीति कमलनाथ सरकार की ही देन है।

कमलनाथ के बिना सत्ता पाना मुश्किल है

आज कांग्रेस मध्यप्रदेश में पुनः सत्ता पाने की दिशा में जी तोड़ प्रयास कर रही है। तमाम नेता बगैर नेतृत्व के मौजूदा सरकार की घेराबंदी में लगे हैं। जिसका खास असर भी नहीं दिख रहा है। वह चाहे विधानसभा में हो या सड़क पर हो। कांग्रेस लड़ाई तो लड़ती है लेकिन उस लड़ाई का असर बेअसर ही रहता है। जिसका सबसे प्रमुख कारण यह है कि मौजूदा नेतृत्व मजबूत नहीं है। ऐसी स्थिति में प्रदेश को कमलनाथ जैसे नेतृत्वकर्ता की बहुत जरूरत है, जो कांग्रेस को मजबूती भी प्रदान करेगा और कार्यकर्ताओं में भी नया जोश भरेगा। उन्होंने अपने कार्यकाल में यह सिद्ध किया है कि वे न केवल कुशल प्रशासक हैं, बल्कि जनता के बीच विश्वसनीय नेता भी हैं। उनकी राजनीतिक समझ, सांगठनिक क्षमताएं, विकास के लिए दृष्टिकोण और जनसमर्थन को देखकर यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि अगर कांग्रेस को मध्यप्रदेश में सरकार बनानी है तो कमलनाथ को ही नेतृत्व देना होगा। यही वजह है कि आज पार्टी आलाकमान के समक्ष सबसे बड़ा प्रश्न यही है कि वह किसके नेतृत्व में इस लक्ष्य को प्राप्त करे। ऐसे में कमलनाथ के नेतृत्व को नजरअंदाज करना न केवल राजनीतिक भूल होगी, बल्कि यह कार्यकर्ताओं के मनोबल पर भी नकारात्मक असर डालेगा। कमलनाथ ने जिस समर्पण भाव से मध्यप्रदेश कांग्रेस को खड़ा किया है, वह किसी से छिपा नहीं है। उन्होंने न केवल राजनीतिक रणनीतियों के स्तर पर पार्टी को मजबूत किया, बल्कि अपनी निजी संसाधनों से भी संगठन को सहारा दिया। वर्ष 2018 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को सत्ता तक पहुंचाने में कमलनाथ की दूरदर्शिता और सांगठनिक कुशलता का बड़ा हाथ रहा। उन्होंने ना केवल अनुभवी नेताओं को एक मंच पर लाया, बल्कि युवाओं को भी महत्व देकर पार्टी के भीतर नई ऊर्जा का संचार किया।

कमलनाथ के विजन और मिशन में बसा है मध्यप्रदेश

कमलनाथ चाहे केंद्र में मंत्री रहे हो या मध्यप्रदेश में मुख्यमंत्री। उनके विजन और मिशन में मध्यप्रदेश हमेशा रहा है। प्रदेश में निवेश की बात हो या विकास की बात हो, उन्होंने हमेशा अपने स्तर पर प्रदेश को विकसित प्रदेश बनाने का प्रयास किया। आज प्रदेश में सड़क का, मेट्रो का नेटवर्क देख रहे हैं उसमें कमलनाथ का योगदान सराहनीय है। छिंदवाड़ा जैसे छोटे शहर को उन्होंने विश्व स्तरीय पहचान दिलाई है। विकास के साथ-साथ रोजगार, उदयोग लगाकर लोगों के जीवन को परिवर्तित किया है।

जीतू पटवारी को कमलनाथ का साथ है जरूरी

मध्यप्रदेश कांग्रेस के वर्तमान अध्यक्ष जीतू पटवारी एक युवा, ऊर्जावान और जनसंपर्क में दक्ष नेता हैं। लेकिन यह भी सच है कि उन्हें प्रदेश की गहराई से समझ और अनुभव की आवश्यकता है, जो उन्हें कमलनाथ के साथ मिलकर प्राप्त हो सकता है। अगर कांग्रेस को मध्यप्रदेश में भविष्य की राजनीति में मजबूती से खड़ा करना है, तो यह आवश्यक है कि युवा नेतृत्व और अनुभवी मार्गदर्शन का मेल हो। कमलनाथ को दरकिनार करके कांग्रेस प्रदेश में कोई मजबूत रणनीति नहीं बना सकती। जीतू पटवारी को चाहिए कि वे कमलनाथ के साथ मिलकर कार्य करें, उनके अनुभव का लाभ लें और उन्हें संगठन के निर्णयों में सम्मिलित करें।

स्वतंत्रता दिवस पर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने दी राज्य को विकास और खुशहाली की सौगात

(पेज 1 का शेष)

विकास की राह पर संकल्प

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने इस अवसर पर राज्य को विकास पथ पर अग्रसर करने की कसम खाई। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ प्राकृतिक संसाधनों से सम्पन्न राज्य है, लेकिन अब इसे केवल खनिज पर आधारित अर्थव्यवस्था से आगे बढ़ाकर औद्योगिक और सेवा क्षेत्र में भी अग्रणी बनाना है। उन्होंने संकल्प लिया कि 2047 तक जब देश आजादी का शताब्दी वर्ष मना रहा होगा, तब तक छत्तीसगढ़ को विकसित राज्यों की श्रेणी में खड़ा करना उनका लक्ष्य है।

कानून-व्यवस्था पर फोकस

मुख्यमंत्री ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि विकास तभी संभव है जब राज्य में शांति और कानून-व्यवस्था कायम हो। उन्होंने पुलिस बल और सुरक्षा एजेंसियों की सराहना की और साथ ही यह आश्वासन भी दिया कि अपराध और नक्सलवाद पर कठोरतम कार्रवाई जारी रहेगी। उन्होंने कहा– "अपराधियों को किसी भी कीमत पर बख्शा नहीं जाएगा। हमारी प्राथमिकता है कि हर नागरिक अपने घर और गाँव में सुरक्षित महसूस करे। जब सुरक्षा होगी, तभी उद्योग आएंगे और खुशहाली बढ़ेगी।"

खुशहाली की ओर कदम

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने जनता को भरोसा दिलाया कि सरकार का हर कदम जनकल्याण की दिशा में होगा। ग्रामीण अंचलों में बिजली, पानी, सड़क और शिक्षा की मूलभूत सुविधाओं को प्राथमिकता देने का ऐलान किया गया। उन्होंने यह भी कहा कि आने वाले वर्षों में छत्तीसगढ़ की पहचान केवल खनिज और वन संपदा तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि यह राज्य आधुनिक उद्योग और आईटी हब के रूप में भी उभरेगा।

जनता की प्रतिक्रिया

समारोह में उपस्थित नागरिकों और ग्रामीण प्रतिनिधियों ने मुख्यमंत्री के भाषण का उत्साहपूर्वक स्वागत किया। लोगों ने माना कि यदि घोषणाएँ ईमानदारी से लागू हुईं तो छत्तीसगढ़ वास्तव में विकास और खुशहाली की राह पर तेजी से आगे बढ़ेगा। 15 अगस्त का यह आयोजन छत्तीसगढ़ के लिए केवल तिरंगा फहराने की रस्म नहीं था, बल्कि यह भविष्य की दिशा तय करने वाला राजनीतिक और सामाजिक संकल्प भी था। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने जनता को सौगातें दीं, विकास का रोडमैप दिखाया और कानून-व्यवस्था को दुरुस्त करने की बात कही।

आने वाले वर्षों में यह देखना दिलचस्प होगा कि उनकी घोषणाएँ कितनी हकीकत बन पाती हैं। लेकिन फिलहाल, स्वतंत्रता दिवस पर उनका यह संबोधन जनता के बीच नई उम्मीदें और सकारात्मक ऊर्जा लेकर आया है।

राजस्व महा-अभियान 2025: जनसेवा के संकल्प के साथ

-अमित राय

जगत प्रवाह. बक्सर। 12 अगस्त, 2025 को राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग, बिहार सरकार के अपर सचिव महेंद्र पाल की उपस्थिति में आगामी राजस्व महा-अभियान 2025 की पूर्व तैयारी हेतु विस्तृत समन्वय बैठक समाहरणालय परिसर स्थित कार्यालय कक्ष में की गई। बैठक में जिलाधिकारी बक्सर, उप विकास आयुक्त बक्सर, अपर समाहर्ता बक्सर, अनुमंडल पदाधिकारी बक्सर/डुमरांव, भूमि सुधार उप समाहर्ता बक्सर/डुमरांव, जिला पंचायत राज पदाधिकारी बक्सर, जिला जन संपर्क पदाधिकारी बक्सर एवं सभी प्रखंड के वरीय पदाधिकारी उपस्थित थे। वहीं सभी प्रखंड के वरीय पदाधिकारी को निदेश दिया गया कि होने वाले राजस्व महा अभियान हेतु चयनित स्थलों का भ्रमण करते हुए सभी आवश्यक सुविधा उपलब्ध कराना सुनिश्चित करेंगे।

अभियान के दौरान होने वाले प्रमुख कार्य

डोर टू डोर अभियानः- घर-घर जाकर जमाबंदी सुधार, छूटी हुई जमाबंदियों का ऑनलाइनकरण, उत्तराधिकारी नामांतरण एवं बंटवारा नामांतरण हेतु आवेदन संकलन। राजस्व कर्मी अपने-अपने क्षेत्र की लंबित मामलों की अद्यतन सूची लेकर पहुंचेंगे।

हल्कावार शिविर (19 अगस्त से 20 सितम्बर) का आयोजनः पंचायत सरकार भवन या अन्य सरकारी भवन में शिविर। म्यूटेशन प्लस पोर्टल (Mutation Plus Portal) पर ऑन-द-स्पॉट आवेदन प्रोसेसिंग।

संपूर्ण विभागीय समन्वयः ग्रामीण विकास, पंचायत राज, सूचना एवं जन संपर्क, तथा अनुसूचित जाति एवं जनजाति कल्याण विभाग का संयुक्त कार्य। पंचायत स्तर पर मुखिया/सरपंच/वार्ड सदस्य को प्रशिक्षण एवं सक्रिय भागीदारी।

जन-जागरूकता और प्रचार-प्रसारः होर्डिंग, पंफलेट, माइकिंग, सोशल मीडिया और डिजिटल माध्यम से सूचना।

सम्पादकीय

प्रधानमंत्री मोदी का 2047 संकल्प और भाजपा के सामने चुनौती

भारत आज जिस निर्णायक मोड़ पर खड़ा है, वहाँ एक ओर तेजी से बदलती वैश्विक राजनीति और अर्थव्यवस्था है, तो दूसरी ओर देश के भीतर बहुस्तरीय सामाजिक-राजनीतिक चुनौतियाँ हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्वतंत्रता के शताब्दी वर्ष 2047 तक "विकसित भारत" का संकल्प प्रस्तुत किया है। यह केवल एक राजनीतिक नारा नहीं, बल्कि आने वाले पच्चीस वर्षों की दिशा और दशा तय करने वाली दृष्टि है। किंतु इस लक्ष्य तक पहुँचना आसान नहीं है। यहाँ भाजपा के सामने न केवल संगठनात्मक और चुनावी चुनौतियाँ हैं, बल्कि आर्थिक, सामाजिक और वैचारिक स्तर पर भी कठिनाइयाँ खड़ी हैं।

मोदी सरकार का "2047 संकल्प" भारत को विकसित राष्ट्र के रूप में देखने का स्वप्न है। इसके प्रमुख आयाम हैं –आर्थिक प्रगति, समावेशी विकास, आत्मनिर्भर भारत, हरित और सतत विकास, वैश्विक नेतृत्व। किसी भी राष्ट्रीय लक्ष्य की सफलता केवल नेतृत्व की दृष्टि पर नहीं, बल्कि राजनीतिक दल की क्षमता पर भी निर्भर करती है। भाजपा आज देश की सबसे बड़ी पार्टी है। 2014 से लगातार उसके पास बहुमत और सरकार पर पकड़ है। लेकिन दीर्घकालिक लक्ष्य के लिए पार्टी को संगठनात्मक ऊर्जा बनाए रखना होगी। भाजपा का सबसे बड़ा आधार हिंदुत्व और विकास की दोहरी धुरी रही है। आने वाले वर्षों में इन दोनों के बीच संतुलन साधना कठिन होगा। क्षेत्रीय दलों के उभार और राज्यों में अलग-अलग समीकरण भाजपा के लिए चुनौती हैं। दक्षिण भारत और पूर्वोत्तर में उसे निरंतर मेहनत करनी होगी। पार्टी के भीतर नेतृत्व की अगली पीढ़ी को तैयार करना भी अहम होगा। मोदी और शाह की जोड़ी ने भाजपा को नई ऊँचाई दी है, लेकिन 2047 तक का सफर पीढ़ीगत बदलाव से गुजरेगा।

विकसित भारत का सपना आर्थिक मजबूती पर टिका है। भारत ने डिजिटल क्रांति, स्टार्टअप संस्कृति और इंफ्रास्ट्रक्चर विकास में उल्लेखनीय प्रगति की है। लेकिन चुनौतियाँ भी कम नहीं हैं बेरोजगारी और कौशल विकास सबसे बड़ी समस्या बनी हुई है। कृषि क्षेत्र अब भी असंगठित और परंपरागत है, जबकि 50% से अधिक लोग उस पर निर्भर हैं। वैश्विक मंदी, आपूर्ति श्रृंखला संकट और तेल की कीमतों जैसी बाहरी चुनौतियाँ अर्थव्यवस्था पर दबाव डाल सकती हैं। भाजपा सरकार को इन मोर्चों पर लगातार ठोस नीतिगत कदम उठाने होंगे।

भारत का सामाजिक ढांचा विविधताओं से भरा है। जाति, धर्म, भाषा और क्षेत्रीय असमानताएँ राजनीतिक समीकरणों को प्रभावित करती हैं। भाजपा की सबसे बड़ी चुनौती यह होगी कि वह समाज के हर वर्ग को साथ लेकर विकास का संदेश दे। भाजपा की राजनीति का मूल आधार वैचारिक है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की विचारधारा ने भाजपा को एक ठोस पहचान दी। लेकिन आने वाले समय में भाजपा को यह तय करना होगा कि क्या वह केवल हिंदुत्व-केन्द्रित राजनीति से आगे जाकर समावेशी राष्ट्रवाद की ओर बढ़ेगी। विकसित राष्ट्र की परिकल्पना तब ही साकार होगी जब भारतीय लोकतंत्र की विविधता और बहुलता को सम्मान दिया जाएगा। अतः भाजपा को वैचारिक रूप से उदार और व्यवहारिक दोनों होना पड़ेगा।

2047 तक भारत को विश्व नेतृत्व की भूमिका निभाने की संभावना है। अमेरिका-चीन प्रतिद्वंद्विता, जलवायु संकट और वैश्विक दक्षिण की आकांक्षाएँ भारत के लिए अवसर भी हैं और चुनौती भी। भाजपा नेतृत्व को भारत की विदेश नीति को और मजबूत करते हुए विकासशील देशों की आवाज बनने की भूमिका निभानी होगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का 2047 संकल्प केवल व्यक्तिगत नेतृत्व का स्वप्न नहीं है, बल्कि यह भारत के भविष्य का खाका है। परंतु भाजपा और सरकार दोनों को यह समझना होगा कि इस लक्ष्य तक पहुँचने के लिए केवल चुनावी सफलता पर्याप्त नहीं है। संगठनात्मक मजबूती, आर्थिक प्रगति, सामाजिक न्याय और वैचारिक संतुलन– इन चार स्तंभों पर ही विकसित भारत की इमारत खड़ी होगी।

सियासी गहमागहमी

राहुल गांधी की बिहार चुनाव पर चुटकी

राहुल गांधी का राजनीति में योगदान अकसर उनकी "चुटकियों" से मापा जाता है। अभी हाल ही में उन्होंने बिहार चुनाव पर भी चुटकी ली। अब बिहार की राजनीति और चुटकियों का रिश्ता वैसा ही है, जैसे परीक्षा और टॉपर लिस्ट का हमेशा चर्चा में। राहुल ने कहा कि बिहार में सब कुछ "जुगाड़" से चलता है। यह सुनकर वहां के मतदाता मुस्कुराए और बोले– "बिलकुल सही कहा, राजनीति भी तो जुगाड़ से ही चल रही है, फिर आपकी पार्टी को जुगाड़ क्यों नहीं सूझ रहा?" असल में राहुल गांधी की चुटकी का असर कुछ ऐसा होता है, जैसे क्रिकेट में फील्डर गेंद पकड़ने से पहले ही तालियां बजा दे। विपक्ष हंस पड़ता है, समर्थक ताली बजा देते हैं और जनता सोचती रह जाती है कि बात मजाक थी या गंभीर टिप्पणी। बिहार चुनाव वैसे भी राजनीतिक प्रयोगशाला मानी जाती है। यहाँ नेता सुबह तक साथ रहते हैं, दोपहर तक गठबंधन बदल लेते हैं और शाम तक नई शपथ का सपना देख लेते हैं। ऐसे में राहुल गांधी की चुटकी ने माहौल हल्का कर दिया। किसी ने कहा– राहुल बिहार को समझना चाहते हैं, लेकिन बिहार वाले अब तक उन्हें समझ नहीं पाए।

मुख्यमंत्री और गृहमंत्री की तकरार

छत्तीसगढ़ की राजनीति में इस बार गर्मी अगस्त की धूप से नहीं, बल्कि मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय और गृहमंत्री विजय शर्मा की तकरार से बढ़ी। खबर है कि मुख्यमंत्री जी किसी मुद्दे पर इतने बिफर पड़े कि गृहमंत्री शर्मा जी को लगा मानो वे विधानसभा में नहीं, घर के ड्राइंग रूम में बेटे को होमवर्क न करने पर डाँट रहे हों। राजनीति में नाराजगी कोई नई बात नहीं है, लेकिन यहाँ मामला कुछ अलग है। आमतौर पर मुख्यमंत्री और गृहमंत्री एक ही थाली के चट्टे-बट्टे होते हैं, मगर इस बार थाली तो वही रही, चम्मचें आपस में टकरा गईं। मुख्यमंत्री जी ने गुस्से में कहा कि गृह विभाग अपनी जिम्मेदारी ठीक से निभाए, वरना जनता सवाल पूछेगी। अब जनता सवाल पूछे, इससे बड़ा डर किसी नेता को नहीं होता, क्योंकि जनता सवाल पूछे तो चुनावी उत्तर-पत्रिका लाल स्याही से भर जाती है। राजनीतिक गलियारों में भी यह चर्चा छिड़ गई कि अगर मुख्यमंत्री और गृहमंत्री में ही 'घर' का माहौल इतना असुरक्षित है, तो प्रदेश की सुरक्षा कौन देखेगा?

हफ्ते का कार्टून

ट्वीट-ट्वीट

16 दिन, 20+ ज़िले, 1,300+ कि.मी.

हम वोटर अधिकार यात्रा लेकर जनता के बीच आ रहे है।

यह सबसे बुनियादी लोकतांत्रिक अधिकार - 'एक व्यक्ति, एक वोट' की रक्षा की लड़ाई है।

संविधान को बचाने के लिए बिहार में हमारे साथ जुड़िए।

-राहुल गांधी

कांग्रेस नेता @RahulGandhi

हम सबके नेता श्री राहुल गांधी ने चुनाव में पारदर्शिता को लेकर जो आंदोलन छेड़ा है, उसके परिणाम आने शुरू हो गए हैं। आज माननीय उच्चतम न्यायालय ने जो फ़ैसला सुनाया है, वह देश में हर नागरिक के वोट के अधिकार को सुरक्षित रखने में मील का पत्थर साबित होगा।

-कमलनाथ

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष

@OfficeOfKNath

स्वतंत्रता दिवस समारोह हर्षोल्लास से मनाकर एक पेड़ मां के नाम लगाया

-प्रमोद बरसले

जगत प्रवाह. टिमरनी। शासकीय नवीन कन्या माध्यमिक विद्यालय सोडलपुर में आज 79वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर ध्वजारोहण किया गया। प्रधान पाठिका श्रीमति ममता रिछारिया, सीमा कौशल अतिथि शिक्षक सुरेश सातनकर एवं छात्राओं के द्वारा प्रभात फेरी निकाली गई। तत्पश्चात छात्राओं के द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गए। इसके उपरांत सभी छात्राओं को लड्डू वितरण किया गया एवं खीर पूड़ी सब्जी का विशेष भोजन करवाया गया। इसके बाद एक पेड़ मां के नाम शाला की शिक्षिकाओं के द्वारा लगाया गया।

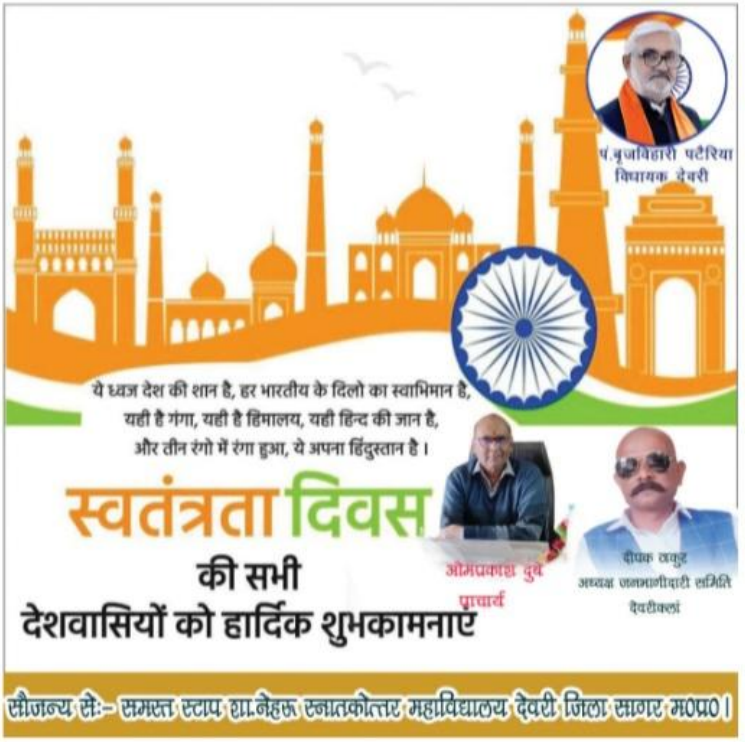

ऑनलाइन गेमिंग का बढ़ता जाल

नई पीढ़ी हो रही ऑनलाइन गेम्स की शिकार

-विजया पाठक

ऑनलाइन गेमिंग आज के डिजिटल युग का एक प्रमुख हिस्सा बन चुका है। यह एक ऐसा प्लेटफॉर्म है जहां खिलाड़ी इंटरनेट के माध्यम से एक-दूसरे के साथ खेल सकते हैं। इसमें विभिन्न प्रकार के खेल शामिल होते हैं, जैसे कि एक्शन, एडवेंचर, शैक्षणिक और स्ट्रैटेजी गेम्स। बच्चों और किशोरों के बीच ऑनलाइन गेमिंग की लोकप्रियता लगातार बढ़ रही है, जिससे यह उनके जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया है। नई पीढ़ी की ऑनलाइन गेमिंग पर बढ़ती पकड़ चिंता का विषय है। युवा खिलाड़ी घंटों तक स्क्रीन के सामने रहकर खेलते हैं, जिससे उनके शारीरिक, आर्थिक और मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। दीर्घकालिक नुकसान भी गंभीर हैं। इसके अलावा, अवसाद, चिंता और सामाजिक अलगाव जैसे मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं भी उत्पन्न हो रही हैं। इस समय हमारे देश में ऑनलाइन गेमिंग का धंधा करीब एक अरब डॉलर तक पहुंच चुका है। वर्ष 2016 में यह 4.3 करोड़ डॉलर का था। दरअसल ऑनलाइन गेमिंग एक ऐसा नशा है, जिसमें जो उलझ गया, वह अपना सबकुछ बरबाद कर देता है। एक तरह से यह जुआ ही है, जिस पर हमारे देश में कोई पाबंदी नहीं है। इसलिए यह बेखौफ चल रहा है। भारत की गेमिंग इंडस्ट्री पर विदेशी निवेशकों के करोड़ों डॉलर लगे हैं।

बड़े-बड़े स्टार लगे प्रचार-प्रसार में

ऑनलाइन गेम्स के प्रचार-प्रसार में कई नामी गिरामी फिल्मी और क्रिकेट स्टार लगे हुए हैं। जिनसे प्रभावित होकर युवा पीढ़ी बहकाने में आ रही है। युवाओं में ऐसी लत गई है कि कर्जदार होने के कारण उनको आत्महत्या करने के सिवाय कोई दूसरा चारा नहीं बचता। हमारी सरकारों को ऐसे विज्ञापनों को रोकने के लिए सख्ती बरतनी होगी। इस तरह खुल्ला विज्ञापन की छूट नहीं दी जा सकती है।

अधिकांश राज्य सरकारें अब तक इस समस्या के प्रति लापरवाह ही रही हैं, लेकिन कर्नाटक समेत कुछ अन्य राज्यों ने इस बारे में कठोर निर्णय लेते हुए इस पर पाबंदी लगा दी है। इसे वाकई में एक सराहनीय फैसला कहा जा सकता है। कर्नाटक सरकार ने प्रतिबंध लगाकर जो हिम्मत दिखाई है, उससे अन्य राज्यों को भी प्रेरणा लेनी चाहिए। वैसे भारत की बात की जाये तो ज्यादातर राज्यों में ऑनलाइन गेम की तूती बोलती है। आखिर वे क्यों बेबस हैं? इन राज्यों में ऑनलाइन गेम वाले करोड़ों कमा रहे हैं। आखिर इन राज्यों की आंखें क्यों नहीं खुलतीं? महत्वपूर्ण यह भी है कि क्या इंटरनेट पर किसी साइट पर लगाया गया प्रतिबंध लंबे समय तक चल पाया है? आज भी कई प्रतिबंधित साइट्स को लोग बदले हुए नामों के साथ देख सकते हैं। जरूरत है कि ऑनलाइन गेम के खिलाफ हम एकजुट होकर इसका विरोध करें, ताकि हमारे बच्चे और युवा दिग्भ्रमित न हों, उन्हें एक सही रास्ता दिखाया जाए। वह अपना कीमती समय और धन बचा सकें। इसके लिए हमें आगे आना ही होगा।

भारत में लगभग 50 करोड़ से ज्यादा गेमर्स हैं और 400 से अधिक गेमिंग कंपनियाँ हैं, जिनमें इंफोसिस लिमिटेड, हाइपरलिंक इंफोसिस्टम, एफजी फैक्टरी और जेनसर टेक्नोलॉजीज शामिल हैं। 2022 में, मोबाइल गेमिंग का उद्योग के कुल मूल्य में लगभग आधा हिस्सा था। भारत में इसका असर बहुत ज्यादा हुआ है। यहां 2021-22 में दुनिया भर में मोबाइल गेमर्स की सबसे बड़ी संख्या (लगभग 507 मिलियन उपयोगकर्ता) दर्ज की गई है। जिसकी वजह सस्ते उपकरण (फ़ोन और एक्सेसरीज़) और सुलभ डाटा प्लान के कारण स्मार्टफोन की पहुंच बढ़ना है। 2023 तक, दुनिया भर में लगभग 3.09 बिलियन सक्रिय वीडियो गेम प्लेयर थे और 2025 तक यह संख्या बढ़कर 4.32 बिलियन तक पहुंच गई है।

ऑनलाइन गेम का प्रतिकूल असर

ऑनलाइन गेम से लोग न केवल अपनी जमा पूंजी खोते हैं बल्कि अपना पूरा जीवन भी गंवा देते हैं। क्योंकि कइयों ने इससे परेशान होकर अपनी जिंदगी ही ख़त्म कर दी है। हाल के महीनों में ऐसे कई मामले सामने आए हैं जिसने सोचने पर मजबूर कर दिया है कि ऑनलाइन गेम्स में जीत-हार की सनक कैसे हमारे मानसिक स्वास्थ्य को इस कदर प्रभावित कर देती है कि लोगों के पास आत्महत्या के सिवा कोई अन्य विकल्प समझ नहीं आता? ऑनलाइन गेम्स जैसे पब्जी, फ्री फायर और अन्य बैटल गेम्स अब महज मनोरंजन का जरिया नहीं रहे, बल्कि कई युवाओं के लिए ये जानलेवा लत बन चुके हैं। हाल के वर्षों में ऐसे कई चौंकाने वाले मामले सामने आए हैं जहां ऑनलाइन गेमिंग की लत ने युवाओं को मानसिक तनाव, आक्रोश और अंत में आत्महत्या तक के रास्ते पर ला खड़ा किया। यह सिर्फ खेल नहीं, एक छुपा हुआ मनोवैज्ञानिक युद्ध साबित हो रहा है, जिसमें हारने वाला अपनी जिंदगी भी दांव पर लगा देता है। मध्यप्रदेश के इंदौर के सातवीं कक्षा के छात्र ने सिर्फ इसलिए फांसी लगा ली क्योंकि वह गेम में 2800 रुपये हार गया था। उसे डर था कि जब परिजनों को यह बात पता चलेगी तो वह उसे डांटेंगे। राजस्थान में भी पति ने पत्नी संग किया सुसाइड कर लिया था। बिजनौर निवासी एक कारोबारी ने भी ऑनलाइन गेम में रकम गंवाने के बाद आत्महत्या कर ली थी। कारोबारी ऑनलाइन गेम में एक करोड़ रुपये से ज्यादा रकम हार चुका था। इसे चुकता करने के लिए उसने फरवरी में 20 बीघा जमीन भी बेच दी थी। उत्तर प्रदेश के कुशीनगर में एक 18 वर्षीय छात्र ने भी फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली थी। उसे भी ऑनलाइन गेम खेलने की लत थी। ऐसे कई हजारों मामले हैं जिनमें लोगों ने आखरी में मौत को ही गले लगाया। ऑनलाइन गेम्स से अभी तक कितने लोगों ने आत्महत्या की है इसकी तो सटीक जानकारी नहीं है लेकिन जिस तरह से मामले प्रतिदिन सामने आ रहे हैं उससे तो यही लगता है कि मौतों की संख्या हजारों में है। 2023 में एनसीआरबी के डेटा के अनुसार भारत में 85 से अधिक आत्महत्या के मामले सीधे तौर पर ऑनलाइन गेमिंग से जुड़े थे। अब ये सिर्फ कुछ वो मामले हैं जहां पर इस ऑनलाइन गेम ने किसी को हत्यारा बना दिया, किसी को किडनैपर बना दिया तो कुछ मामलों में आत्महत्या जैसे आत्मघाती कदम भी उठ गए।

ऑनलाइन गेमिंग की जद में 41 फीसदी आबादी

रिपोर्ट और रिसर्च इस बात की तस्दीक करती हैं कि भारत का एक बड़ा युवा वर्ग ऑनलाइन गेम्स की जद में बुरी तरह फंस चुका है। इस समय भारत की 41 फीसदी आबादी जो 20 साल से कम उम्र की है, ऑनलाइन गेम्स की आदी बन चुकी है। 2018 तक भारत में ऑनलाइन गेम खेलने वालों की संख्या 26.90 करोड़ थी लेकिन कोरोना काल के बाद से इस आंकड़े में बड़ा इजाफा हुआ और अब 2025 के अंत तक ये आंकड़ा 51 करोड़ को भी पार कर सकता है।

कितना है ऑनलाइन गेमिंग का व्यापार?

ऑनलाइन गेमिंग का ग्लोबल मार्केट साल 2019 में 37.65 बिलियन डॉलर था और अब कई रिपोर्ट्स में दावा किया जा रहा है कि 2025 में 122.05 बिलियन अमेरिकी डॉलर होने की उम्मीद है. वहीं, भारत में ऑनलाइन गेमिंग की इंडस्ट्री 2016 में 543 मिलियन डॉलर की थी और फिर 2020 में इसमें 18.6 फीसदी बढ़ोतरी हो गई है।

देश के 79वें स्वतंत्रता दिवस पर मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने गिनाई अपनी सरकार की उपलब्धियां

-शशि पांडे

जगत प्रवाह. रायपुर। देश के 79वें स्वतंत्रता दिवस पर मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने अपनी सरकार की उपलब्धियां गिनाई और कहा कि देश के 79वें स्वतंत्रता दिवस के साथ-साथ हम छत्तीसगढ़ राज्य की स्थापना के 25 गौरवशाली वर्षों की विकास यात्रा को ''छत्तीसगढ़ रजत महोत्सव'' के रूप में मना रहे हैं। हम अपने राज्य के निर्माता पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न श्रद्धेय श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी को नमन करते हैं, जिन्होंने अपना अटल संकल्प पूरा किया और देश के नक्शे में छत्तीसगढ़ का एक नये राज्य के रूप में उदय हुआ। छत्तीसगढ़ की पुण्य धरा प्राकृतिक संसाधनों से सम्पन्न है। हमारे पास समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर हैं और अपार उत्साह समेटे हुए विपुल मानव संसाधन हैं। एक नवंबर 2000 को जब यह राज्य बना, तब हमने एक सपना देखा था, एक विकसित, आत्मनिर्भर और समावेशी छत्तीसगढ़ का। उन्होंने कहा कि आज मैं गर्व से कह सकता हूँ कि हम उस दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। आपातकाल के पचास बरस पूरे हो गये हैं। हम अपने लोकतंत्र सेनानियों को नमन करते हैं, जिन्होंने आपातकाल के बेहद कठिन दौर में यातनाओं की परवाह न करते हुए लोकतंत्र की मशाल थामें रखी। मातृभूमि के लिए अपने हिस्से की जिम्मेदारी हमें निभानी है। हमें प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में वर्ष 2047 तक विकसित भारत-विकसित छत्तीसगढ़ की संकल्पना को मूर्त रूप देना है। प्रधानमंत्री की अगुवाई में भारत की अर्थव्यवस्था दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था हो गई है। हमारा चंद्रयान चंद्रमा के दक्षिण ध्रुव पर पहुंच चुका है और शुभांशु शुक्ला ने इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन में तिरंगा लहरा दिया है। साथ ने प्रधानमंत्री और केन्द्रीय गृहमंत्री के नेतृत्व में हम मार्च 2026 तक देश को माओवादी आतंक से मुक्त करने के लक्ष्य की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं। पिछले 20 महीनों में हमारे जवानों ने 450 माओवादियों को न्यूट्रलाइज और 1578 को गिरफ्तार किया है। नक्सलवाद के कम होते ही बस्तर में विकास की रफ्तार तेजी से बढ़ी है। 50 बंद स्कूल फिर से खोले गए और कई गांवों में पहली बार बिजली पहुंची। नियद नेल्ला नार अर्थात आपका अच्छा गाँव योजना से 327 गांवों में बुनियादी सुविधाएं पहुंची हैं। पामेड़, जो कभी नक्सलियों का गढ़ था, वहां अब बैंक की शाखा खुल गई हैं। महिला सशक्तीकरण हमारी सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। सरकार बनने के तीन महीने के भीतर हमने महतारी वंदन योजना शुरू की। प्रदेश में 70 लाख महिलाओं को हर महीने एक-एक हजार रूपए की आर्थिक सहायता दी जा रही है। इस योजना से महिलाएं आत्मनिर्भरता की राह पर कदम बढ़ा रही हैं। महतारी वंदन योजना के तहत माताओं-बहनों को अब तक 11 हजार 728 करोड़ रूपए की राशि दी जा चुकी है। रायगढ़ जिले से हमने महिला समूहों को रेडी टू ईट फूड निर्माण का काम सौंपा है और इसका विस्तार जल्द ही हम अन्य जिलों में करेंगे। राज्य के किसान भाइयों का कल्याण हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। साय ने कहा कि कृषक उन्नति योजना के माध्यम से छत्तीसगढ़ के किसानों को धान का सबसे ज्यादा मूल्य मिल रहा है। हमने पिछले खरीफ सीजन में 149 लाख मीट्रिक टन धान की रिकॉर्ड खरीदी की है। छत्तीसगढ़ के 26 लाख किसान भाइयों को प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि का लाभ मिल रहा है। खास बात यह है कि इस योजना से विशेष पिछड़ी जनजाति के 32 हजार 500 किसान भी लाभान्वित हो रहे हैं। निवेशकों के लिए छत्तीसगढ़ पसंदीदा राज्य बन चुका है। हमने दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरू के साथ ही रायपुर में भी इन्वेस्टर्स समिट किये। इन समिट के माध्यम से अब तक 6 लाख 65 हजार करोड़ रुपए के निवेश प्रस्ताव हमें मिल चुके हैं।

संबोधन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया बस्तर का जिक्र

-आनंद शर्मा

जगत प्रवाह. रायपुर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 79वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर लाल किले की प्राचीर से राष्ट्र को संबोधित करते हुए छत्तीसगढ़ के बस्तर का विशेष रूप से उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि एक समय था जब बस्तर का नाम सुनते ही नक्सलवाद और हिंसा की याद आती थी, लेकिन आज यह तस्वीर पूरी तरह बदल चुकी है। प्रधानमंत्री ने गर्व के साथ कहा कि आज बस्तर के नौजवान बंदूक पकड़ने की जगह खेलों के मैदान में उतर रहे हैं। बस्तर ओलंपिक जैसे आयोजन युवाओं की ऊर्जा, प्रतिभा और उत्साह का जीवंत प्रतीक बन चुके हैं। उन्होंने इस ऐतिहासिक बदलाव को सुरक्षा, विकास और जनसहभागिता के संयुक्त प्रयासों का परिणाम बताया। प्रधानमंत्री ने कहा कि कभी देश के अनेक हिस्सों को नक्सलवाद की गंभीर समस्या का सामना करना पड़ता था। हिंसा और भय के माहौल ने दशकों तक विकास की गति को जकड़ रखा था, जिससे प्रगति के रास्ते थम से गए थे। उन्होंने कहा कि अब यह स्थिति पूरी तरह बदल चुकी है — नक्सलवाद आज देश में केवल कुछ ही जिलों तक सीमित रह गया है। प्रधानमंत्री ने कहा कि पिछले 11 वर्षों में नक्सलवाद 125 से अधिक जिलों से घटकर मात्र 20 जिलों तक सीमित हो गया है। उन्होंने कहा कि आज बस्तर में खेलकूद, शिक्षा, पर्यटन और रोजगार के नए अवसर लगातार बढ़ रहे हैं।

जन्माष्टमी पर विशेष

श्रीकृष्ण: कर्मयोग के शाश्वत मार्गदर्शक

आज की बात

प्रवीण कक्कड़
स्वतंत्र लेखक

जन्माष्टमी का पर्व केवल उपवास, उत्सव और झाँकियों तक सीमित नहीं है। यह अपने भीतर उस चेतना को जगाने का दिन है, जो हमें श्रीकृष्ण के विराट व्यक्तित्व से जोड़ती है। यह उस ज्ञान को आत्मसात करने का अवसर है, जिसने अर्जुन को ही नहीं, बल्कि युगों-युगों से मानवता को निराशा के अंधकार से निकालकर कर्म के प्रकाश की ओर अग्रसर किया है। एक पुलिस अधिकारी की खाकी वर्दी के अनुशासन से लेकर मंत्रालय की जिम्मेदारियों तक, जीवन ने मुझे अनेक भूमिकाओं में परखा। इन उतार-चढ़ावों की पाठशाला में, जब भी मैं किसी दोराहे पर खड़ा हुआ, मुझे श्रीकृष्ण के जीवन और उनकी गीता में ही अपने हर प्रश्न का उत्तर मिला। यह लेख उन्हीं अनुभवों का सार है, जो गीता के ज्ञान और श्रीकृष्ण की प्रेरणा से सिंचित है।

जिन हाथों ने चुराया माखन उन्हीं ने हांका रथ

श्रीकृष्ण का जीवन हमें सिखाता है कि व्यक्तित्व किसी एक भूमिका में सीमित नहीं होता। एक ओर वे माखन चुराते, गोपियों संग रास रचाते और अपनी चंचलता से सबका मन मोह लेते हैं, तो दूसरी ओर कुरुक्षेत्र के मैदान में एक गंभीर सारथी, कुशल रणनीतिकार और विराट दार्शनिक के रूप में खड़े होते हैं। हर माँ आज भी अपने बच्चे में उसी 'कान्हा' की छवि देखती है, क्योंकि कृष्ण सरलता, प्रेम और निःस्वार्थता का सबसे जीवंत प्रतीक हैं। लेकिन उनका असली स्वरूप तब प्रकट होता है, जब वे मोह और दुविधा में डूबे अर्जुन को उसके 'स्वधर्म' का बोध कराते हैं। उनका जीवन यह संदेश देता है कि परिस्थितियाँ कैसी भी हों, अपनी भूमिका को पूरी निष्ठा और प्रामाणिकता से निभाना ही जीवन का सबसे बड़ा यज्ञ है।

गीता: जब कर्म ही पूजा बन जाए

श्रीकृष्ण का सबसे बड़ा उपहार है भगवद्गीता और उसका हृदय है कर्मयोग का सिद्धांत "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।" (तुम्हारा अधिकार केवल कर्म करने में है, उसके फल पर कभी नहीं।) यह मात्र एक श्लोक नहीं, बल्कि जीवन प्रबंधन का सबसे बड़ा सूत्र है। पुलिस और प्रशासनिक जिम्मेदारियों में कई बार ऐसा हुआ जब मुझे इसी वाक्य ने संभाला। इसने सिखाया कि मेरी शक्ति और मेरा धर्म केवल अपना सर्वश्रेष्ठ देना है। परिणाम मेरे हाथ में नहीं है, और उसकी चिंता मुझे मेरे पथ से डिगा नहीं सकती। कर्म यदि निस्वार्थ और सच्ची नीयत से किया जाए, तो वह स्वयं में एक पुरस्कार है।

परिवर्तन: इस सत्य को मैंने जिया है

मेरा करियर कभी सीधी रेखा में नहीं चला। एक दिन खाकी वर्दी का अनुशासन था, तो अगले दिन मंत्रालय के गलियारों की कूटनीति। पद बदले, चुनौतियाँ बदलीं, माहौल बदला। कई लोग ऐसे परिवर्तनों से घबरा जाते हैं, लेकिन मैंने श्रीकृष्ण के जीवन से सीखा कि परिवर्तन अंत नहीं, बल्कि नए अध्याय की शुरुआत है। जो यमुना किनारे बांसुरी बजाता था, वही द्वारिका का राजा बना। जो ग्वाला था, वही सबसे बड़ा रणनीतिकार और मार्गदर्शक बना। श्रीकृष्ण ने कभी किसी भूमिका को छोटा या बड़ा नहीं माना, बल्कि हर परिस्थिति में स्वयं को ढाला।

यह सीख आज के अनिश्चित समय में संजीवनी की तरह है- जो व्यक्ति परिवर्तन को अवसर मानता है, वह कभी पराजित नहीं हो सकता।

सेवा का भाव: जब दूसरों की पीड़ा अपनी लगे

श्रीकृष्ण के जीवन का एक और प्रेरक पहलू है, निःस्वार्थ सेवा। उन्होंने सुदामा की दरिद्रता दूर की, द्रौपदी की लाज बचाई और पांडवों का हर संकट में साथ दिया। उन्होंने सिखाया कि सच्ची मानवता दूसरों की पीड़ा को महसूस करने और बिना किसी अपेक्षा के मदद का हाथ बढ़ाने में है। अपने कार्यकाल में मुझे अनगिनत लोगों से मिलने का अवसर मिला, किसी की आँखों में न्याय की उम्मीद, किसी की आवाज में मदद की गुहार।

जब भी मैं अपनी क्षमता से किसी की मदद कर पाया, तो उसकी आँखों में जो कृतज्ञता और संतोष का भाव देखा, वह किसी भी पद या पुरस्कार से कहीं बड़ा था। यही वे क्षण थे जब मैंने महसूस किया कि अपने कर्तव्य के माध्यम से मैं ईश्वर की ही सेवा कर रहा हूँ, यही कृष्ण की सच्ची भक्ति है।

आज के युग में गीता की प्रासंगिकता

आज हम तनाव, प्रतिस्पर्धा और भविष्य की अनिश्चितता से घिरे हैं। ऐसे में गीता का संदेश और भी महत्वपूर्ण हो जाता है।

वर्तमान में जिएँ: अतीत के पछतावे और भविष्य की चिंता से मुक्त होकर आज के कर्म पर ध्यान दें।

निष्काम कर्म: परिणाम की आसक्ति के बिना अपना शत-प्रतिशत दें।

संतुलित मन: सुख-दुःख, लाभ-हानि, जय-पराजय में समभाव बनाए रखें।

सद्भाव और सहयोग: व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठकर समाज के हित में कार्य करें।

जन्माष्टमी का संकल्प

जन्माष्टमी हमें यह याद दिलाती है कि श्रीकृष्ण हमारे भीतर की वह चेतना हैं जो हमें सही मार्ग दिखाती है। गीता कोई केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि जीवन जीने की अद्भुत कला है।

आइए, इस पावन अवसर पर हम संकल्प लें कि हम अपने जीवन में कर्म को सर्वोपरि रखेंगे, हर परिवर्तन का साहस से स्वागत करेंगे और सेवा भाव को अपनाकर अपने जीवन को सार्थक बनाएंगे। जब हम ऐसा करेंगे, तो हर दिन जन्माष्टमी होगी और हमारा हर कर्म मुरली की धुन की तरह मधुर और पवित्र बन जाएगा।

पूर्व मंत्री संजय पाठक ने उल्टा फहराया तिरंगा, SDM ने जांच के आदेश दिए, वीडियो वायरल

-संवाददाता

जगत प्रवाह. कटनी। स्वतंत्रता दिवस के मौके पर कटनी जिले से एक चौंकाने वाला मामला सामने आया है। विजयराघवगढ़ किले में ध्वजारोहण के दौरान पूर्व मंत्री एवं वर्तमान विधायक संजय पाठक ने तिरंगा उल्टा फहरा दिया। यह किला 1857 की आजादी की शुरुआत का गवाह माना जाता है, ऐसे में यहां राष्ट्रीय ध्वज के अपमान जैसी गलती ने सभी को हैरान कर दिया। जानकारी के मुताबिक, विधायक संजय पाठक ने स्वतंत्रता दिवस समारोह में विजयराघवगढ़ किले पर ध्वजारोहण किया। इस दौरान राष्ट्रीय ध्वज उल्टा फहरा दिया गया और उन्होंने राष्ट्रीय गान के साथ उसे सलामी भी दी। कुछ ही क्षण बाद मौजूद लोगों की नजर झंडे पर पड़ी, तो हड़कंप मच गया। तत्काल तिरंगे को उतारकर सही तरीके से पुनः फहराया गया, जिसे फिर से विधायक पाठक ने सलामी दी।

कलेक्टर, एसपी के नेतृत्व में तिरंगा रैली का हुआ आयोजन, बच्चों में दिखा जोश और उत्साह

-नरेन्द्र दीक्षित

जगत प्रवाह. नर्मदापुरम। जिला मुख्यालय पुलिस ग्राउंड पर स्वतंत्रता दिवस परेड की फाइनल रिहर्सल के उपरांत भव्य हर घर तिरंगा रैली का आयोजन कलेक्टर सोनिया मीना के नेतृत्व में पुलिस अधीक्षक डॉ. गुरकरन सिंह के साथ किया गया। नर्मदापुरम पुलिस लाइन से भव्य तिरंगा रैली निकाली गई, जिसमें देशभक्ति का अद्वितीय उत्साह एवं जोश देखने को मिला। रैली पुलिस लाइन से प्रारंभ होकर मिनाक्षी चौक होते हुए अजाक चौक तक पहुँची और पुनः पुलिस लाइन में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर जिला कलेक्टर सोनिया मीना, पुलिस अधीक्षक डॉ. गुरकरन सिंह, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत एस एस रावत, एसडीओपी नर्मदापुरम जितेंद्र पाठक, रक्षित निरीक्षक स्नेहा चंदेल ,थाना प्रभारी कोतवाली कंचन ठाकुर,थाना प्रभारी देहात सौरभ पांडे सहित पुलिस एवं प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का उद्देश्य स्वतंत्रता दिवस के प्रति जनमानस में उत्साह का संचार करना एवं नई पीढ़ी में देश प्रेम की भावना जागृत करना था। रैली में जिले के विभिन्न विद्यालयों के लगभग 500 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया जिन्होंने हाथों में तिरंगा थामे, राष्ट्रभक्ति के गीत गाते हुए और नारों के साथ शहरवासियों को एकता, भाईचारा एवं देशभक्ति का संदेश दिया।

स्वाधीनता के अमर बलिदानियों को कोटि-कोटि नमन

स्वदेशी की शक्ति से आत्मनिर्भरता को गति देता मध्यप्रदेश

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

79वें स्वतंत्रता दिवस

की प्रदेशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

स्वदेशी अभियान के साथ औद्योगिक विकास

उद्योगों को बढ़ावा देने के प्रयासों से ₹32 लाख करोड़ से अधिक के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए, जिनसे 23 लाख से अधिक रोज़गार होंगे सृजित

कमज़ोर वर्ग का उत्थान

मुख्यमंत्री सुगम परिवहन सेवा, डॉ. भीमराव अम्बेडकर कामधेनु योजना, संबल योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना, सामाजिक सुरक्षा पेंशन जैसी अनेक योजनाओं के माध्यम से जरूरतमंदों को मिल रही सहायता

युवाओं का सर्वांगीण विकास

शिक्षा, कौशल निर्माण के साथ युवाओं के सर्वांगीण विकास के लिए स्वामी विवेकानंद युवा शक्ति मिशन प्रारंभ, कौशल विकास और रोज़गार के अवसरों से जोड़ने के लिए मध्यप्रदेश युवा प्रेरक अभियान और आगामी 5 वर्षों में 2.5 लाख नौकरियां देने जैसे प्रयासों से युवा हो रहे सशक्त

आत्मनिर्भर होती महिलाएं

महिलाओं के सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण के लिए देवी अहिल्या नारी सशक्तिकरण मिशन, मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना में प्रतिमाह ₹1250, एमएसएमई में महिला उद्यमियों को प्रोत्साहन, लखपति दीदी योजना और शासकीय सेवाओं में 35% तक महिला आरक्षण

खुशहाल और समृद्ध अन्नदाता

किसानों की आय में वृद्धि, जलवायु-अनुकूल खेती तथा फसल का उचित मूल्य निर्धारित करने के लिए मध्यप्रदेश कृषक कल्याण मिशन, कृषि संबंधित उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए कृषि उद्योग समागम का आयोजन, पीएम किसान सम्मान निधि एवं मुख्यमंत्री किसान कल्याण योजना से आ रही है खुशहाली

प्रातः 9:00 बजे मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव से लाइव जुड़ें

R.O. No. : D18041/25

“ स्वतंत्रता दिवस केवल एक पर्व नहीं, बल्कि यह हमारी राष्ट्रीय अस्मिता, स्वाभिमान और गौरव का प्रतीक है। यह अवसर हमें हमारे स्वतंत्रता सेनानियों के त्याग, बलिदान और योगदान को स्मरण करने तथा उनके दिखाए मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है।

-डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

मध्यप्रदेश जनसंपर्क द्वारा जारी | सीधा प्रसारण webcast.gov.in/mp/cmevents | @Cmmadhyapradesh @jansampark.madhyapradesh | @Cmmadhypradesh @jansamparkMP | JansamparkMP | आकल्पन : मध्यप्रदेश माध्यम/2025

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक विजया पाठक द्वारा जेयन आफसेट वर्क्स, पुल बोगदा भोपाल 462023 (मप्र) से मुद्रित तथा एफ-116/17, शिवाजी नगर, भोपाल (मप्र) से प्रकाशित। **संपादक : विजया पाठक।**
RNI-MPBIL/2011/39805 समाचार चयन के लिए पी.आर.बी. एक्ट के तहत जिम्मेदार। (सभी विवादों का न्यायक्षेत्र भोपाल रहेगा।)